सल्तनत काल में भारतीय समाज की स्थिति

Sanjeev Kumar, Assistant Professor History
Govt. College Chhachhrauli, Yamuna Nagar

सल्तनत काल भारत 1206–1526 तक का काल माना जाता है इस काल में भारतीय समाज में मुसलमानों के रूप में एक ऐसा तत्व आ गया जिसे हिन्दु समाज कालान्तर में भी आत्मसात ना कर सका। इस काल में भारतीय समाज दो वर्गों में बटा हुआ था। मुस्लिम समाज तथा हिन्दु समाज इस के आगे अनेक वर्ग भी थे। इन दोनों समाजों में काफी अन्तर था मुस्लिम वर्ग शासक वर्ग था। हिन्दु वर्ग शासित वर्ग। मुस्लिम वर्ग एक सम्मानित वर्ग समझा जाता था। उन्हें सब सुविधाएं प्राप्त थी। हिन्दु वर्ग की दशा दयनीय थी यह वर्ग अधिकार हीन वर्ग था। राज्य का अधिकांश कर भार भी उन्हीं के ऊपर था। तत्कालीन समाज को जानने के लिए दोनों का अलग–अलग अध्ययन करना जरूरी है।

मुस्लिम समाज– सल्तनत काल में मुस्लिम समाज दो वर्गों में बटाँ हुआ था विदेशी मुसलमान तथा भारतीय मुसलमान इन दानों वर्गों के सामाजिक जीवन में बड़ा अन्तर था।

विदेशी मुसलमान– विदेशी मुसलमान समाज का सबसे सम्मानित वर्ग था भारत की शासन सत्ता इसी वर्ग के हाथ में थी राज दरबार में इनका बड़ा प्रभाव था राज्य के सभी उच्च पद इसी वर्ग के लिए सुरक्षित थे। इन्हें बड़ी–बड़ी जागीरे मिली हुई थी समाज व शासन दोनों में इनका बड़ा सम्मान था विदेशी मुसलमानों में ईरानी, तुर्क, अरब, अफगान आदि आते थे। 13वीं सदी तक तुर्क मुसलमानों का प्रभुत्व था शासक इसी वर्ग के थे। परन्तु 14वी शताब्दी में सत्ता खिलजी वंश के हाथों में आ गई। इस वर्ग के मुसलमानों ने परस्पर विवाह, खान–पान, मेल–जोल की नीति को अपनाया। इस से सभी विदेशी मुसलमान स्तर पर आ गये। भारतीय मुसलमानों को उच्च पद नहीं दिये जाते थे। परन्तु दिल्ली में जब खिलजी वंश की स्थापना हुई। उस समय इन की स्थिति में कुछ परिवर्तन आया। लेकिन सामाजिक दृष्टि से भारतीय मुसलमान विदेशी (तुर्क) मुसलमानों के स्तर तक न पहुँच सके। लेकिन रजनीति में इन्हें कुछ उच्च पद मिलने लगे। जैसे अलाउद्दीन खिलजी ने मलिक काफूर को मन्त्री बनाया जो हिन्दु था। फिरोज तुगलक को ख्वाजा जहाँ का प्रधानमंत्री नियुक्त किया। इन्होंने हिन्दु धर्म को छोड़कर इस्लाम धर्म स्वीकार किया था यह भारतीय मुसलमानों की श्रेणी में आते थे।

मुस्लिम समाज के वग/ उपवर्ग- मुस्लिम समाज के कई वर्ग व उपवर्ग थे- सुल्तान व दरबारी वर्ग, अमीरवर्ग, उलेमावर्ग, दासवर्ग, सामान्य वर्ग।

1. **सुल्तान व दरबारी वर्ग**- सुल्तान व दरबारी वर्ग की स्थिति समाज में बहुत अच्छी थी। सुल्तान सामान्यतः समाज का आदर्श माना जाता था। सुल्तान का वैभव आपार था उन के पास महल, हरम, दास दासियां, नौकर-चाकर होते थे। प्रधान बेगम तथा सुल्तान की माता का समाज में विशेष स्थान था उन्हें विशेष अधिकार प्राप्त थे। सुल्तान की शान-शौकत, ठाट-बाठ निराला था। सुल्तान को खुदाबन्दा अलम कहा जाता था। सुल्तान के नाम का खुतबा पढ़ा जाता था। उनके नाम के सिक्के बनते थे वह रत्न जड़ीत ताज पहनता था। सुल्तान जब दरबार में बैठता था उनके सामने अमीर सचिव, वजीर, उच्च अधिकारी पंक्तियों में खड़े रहते थे। राज दरबार में शिष्टाचार का अत्याधिक महत्व था। उसका पालन न करने वाले को अपमानित होना पड़ा था। सुल्तान के साथ दरबारी वर्ग में जो अधिकारी व परिवार के लोग उन को भी सम्मान के दृष्टिकोण से देखा जाता था। समाज में उनका भी बड़ा महत्व था।
2. **अमीर वर्ग**- अमीर वर्ग को समाज में बड़ा सम्मान प्राप्त था अमीरों की कई श्रेणियाँ थी जैसे खान, अधिक अमीर। अमीर शब्द का प्रयोग राज्य के सभी सैनिक तथा असैनिक पदाधिकारियों के लिये होता था। मुस्लिम अमीरों की जिन्दगी के दो ही पक्ष थे राज्य (युद्ध), वज्य (आमोद-प्रमोद)। जो युद्ध में तलवारों की भयकर सुनते थे या महल में बैठकर किसी रमणी की स्वर लहरी।
3. **उलेमा वर्ग**- उलेमा मुस्लिम समाज का धार्मिक वर्ग था समाज में धर्म, न्याय, शिक्षा का कार्य यही वर्ग करता था। इस वर्ग में धर्माचार्य, सैय्यद, जीर इत्यादि आते थे। ये लोग साफा (पगड़ी) बाँधते थे इस कारण इन्हें दस्तार बन्दा कहते थे। सैय्यद कुलह (विशेष प्रकार की उपाधिया) धारण करते थे उन्हें क़लाह दारान्त कहते थे। इस वर्ग को धर्म की जानकारी थी लेकिन इस वर्ग में मिथ्या दम्भ, पाखण्ड और गर्व भी बहुत था। दिल्ली में बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुगलक कुछ सुल्तानों का छोड़कर शेष सुल्तान उलेमा वर्ग के प्रभाव से युक्त नहीं थे।
4. **दास वर्ग**- मुस्लिम समाज मं दासों का एक वर्ग था जिस में दास व दासियाँ आते थे। दास सुल्तान व उच्च मुस्लिम परिवारों में काम करते थे। दास रखना गौरव का प्रतीक माना जाता था अलाउद्दीन

खिलजी ने 50 हजार व फिरोज तुगलक ने 1 लाख 80 हजार दास रखे हुए थे। गुलाम अपने स्वामी के मोहताज थे स्वामी उनका इच्छानुसार प्रयोग कर सकता था। गुलाम उच्च पदों पर भी थे। सल्तनत काल का प्रारम्भ दास वंश (गुलाम वंश) से हुआ था।

5. **सामान्य वर्ग**- सामान्य वर्ग के मुसलमानों में वे लोग आते थे जो पहले हिन्दु थे जिन्होने बाद में इस्लाम धर्म को स्वीकार किया था इस्लाम धर्म को स्वीकार करने के बाद भी वे हिन्दु संस्कारों को नहीं भुला पाये थे। इसलिए समाज में इनका निम्न स्थान था इस में शिल्पी, दुकानदार, व्यापारी, क्लर्क इत्यादि आतते थे।

हिन्दु समाज

सल्तनत कालीन भारत में समाज के अन्तर्गत हिन्दुओं की संख्या लगभग 95 प्रतिशत थो। इसके अन्तर्गत कुलीन समाज, प्रशासनिक कर्मचारी। विशेषकर राजस्व अधिकारी। सुत, मुकद्दम, चौधरी, व्यापारी, दुकानदार, किसान, मजदूर आदि शामिल थे परन्तु पराजित जाति होने के कारण समाज में इनका महत्व निम्न था। क्योंकि हिन्दुओं पर तुर्कों ने विजेता के रूप में आक्रमण करके उन्हें पराजित किया। हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा। हजारों नारियों के साथ बलात्कार कर अपनी दासियां बनाया और सैकड़ों मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इस कारण हिन्दु छिन्न-भिन्न अवस्था में पहुँच गया। वित्त विभाग के निम्न पदों को छोड़कर उन्हें सरकारी नौकरियों से अलग कर दिया गया। अगर कोई हिन्दु मुसलमान बन जाता था उन्हें आयोग्य होते हुए भी उच्च पद प्रदान कर दिया गया। समाज में शूद्रों का निम्न स्थान था। अतः हिन्दु समाज के शूद्रो में धर्म परिवर्तन के प्रति आकर्षण उत्पन्न हुआ। उन्होंने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया। उन्हें प्रशासन में छोटीमोटी नौकरी प्रदान की गइ। इसके अलावा हिन्दुओं पर अत्याधिक कर लगाये जाते थे। जजिया कर वसूल किया जाता था। युद्ध में जितने हिन्दु स्त्री-पुरूष, बच्चे बन्दी बनाए जाते थे। उन्हें मुसलमान बनाया जाता था। इस कारण हिन्दओं में एक भय छा गया। इस कारण कई हिन्दुओं ने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया। पाणिकर नामक इतिहासकार ने लिखा है उत्तर प्रदेश में 600 वर्षों के स्थाई मुस्लिम शासन के बावजूद भी जनसंख्या का केवल 14 प्रतिशत भाग मुसलमान था यह हिन्दु धर्म की दुर्लभ शक्ति का प्रमाण था। हिन्दु समाज में इसके अतिरिक्त कई और बाते थी।

जाति प्रथाः– हिन्दु समाज में जाति प्रथा बड़ी कठोर थी इसमें कई जातियां एवम् उपजातियां थी इसमें ब्राह्मणों का स्थान उच्च था। धर्म, शिक्षा का कार्य, यह वर्ग करता था, क्षत्रिय वर्ग का स्थान दूसरा था सुरक्षा का कार्य इसी वर्ग के हाथ में था तीसरा स्थान वेश्यों का था चौथा स्थान शूद्रों का था शूद्रों को समाज में अपमान के दृष्टिकोण से देखा जाता था। इस कारण इन्होंने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया था। जाति बन्धन बड़े कठोर थे जातियों में कई उपजातियां थी। स्थान के आधार पर कर्म के आधार पर इनका निर्माण हुआ था। जाति बन्धन इतना कठोर था कि अन्तर्जातिय विवाह नहीं होते थे। हिन्दुओं में अछूतों का भी वर्ग था। मुसलमानों को भी हिन्दु अछूत समझते थे उनके हाथ का पानी तक नहीं पीते थे।

संयुक्त परिवारः– हिन्दु समाज में परिवार संयुक्त होते थे परिवार में व्यक्तिगत सम्प्रति का कोई स्थान नहीं था परिवार में सभी को बराबर माना जाता था। बड़ों का बड़ा सम्मान था उन्हें पूज्यनीय माना जाता था। मुसलमानों मे परिवार इसी प्रकार थे। लेकिन परिवार में नारी का स्थान मुसलमान निम्न समझते थे उन्हें तलाक देने का अधिकार था यह बात हिन्दु समाज में नहीं थी।

स्त्रियों की दशाः– सल्तनत काल में समाज में नारी का स्थान पुरूष से निम्न था। स्त्री पुत्री के रूप में पिता के संरक्षण में, पत्नी के रूप में पति के संरक्षण में, विधवा होने पर पुत्र के संरक्षण में रहती थी। समाज में लड़की का जन्म शुभ नहीं माना जाता था। जन्म होते ही उनकी हत्या कर दी जाती थीं पुत्रवती स्त्री का परिवार में बड़ा सम्मान होता था फिर भी परिवार के सारे भेद उन्हें नहीं बताये जाते थे। जहां तक शिक्षा की बात है केवल उच्च परिवारों में स्त्री शिक्षा का प्रचलन था रजिया सुल्तान, पदमावती, मीराबाई इस युग की शिक्षित स्त्रियां थी। लेकिन आम परिवारों में स्त्री शिक्षा का प्रचलन नहीं था। स्त्रियों का काम केवल घर में रहकर घरेलू कार्य करना था।

पर्दा प्रथाः– सल्तनत काल में पर्दा प्रथा का समाज में काफी प्रचलन था मुसलमानों व हिन्दुओं में इस प्रथा को महत्व दिया जाता था मुसलमानों ने इसे इसलिए अपनाया ताकि जनसाधारण की निगाहो से स्त्रियों को बचा सके। हिन्दुओं ने इसे इसलिए अपनाया था ताकि स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा कर सके। क्योंकि मुसलमानों के द्वारा हिन्दु स्त्रियों को उठा लिया जाता था निम्न वर्ग की बजाये उच्च घरानों में यह प्रथा थी समाज में पर्दा व्यक्ति के सम्मान का प्रतीक माना जाता था जिनता बड़ा रूतबा उतना बड़ा पर्दा हुआ करता था। उच्च घरानों की स्त्रियों को

आने जाने के लिए पालकी में बैठना पड़ता था। साधारण मुस्लिम स्त्रियां बुर्का में आती थी हिन्दु समाज में प्रत्येक वर्ग की महिलाओं में पर्दा प्रथा प्रचलित थी।

विवाहः- विवाह की आयु सीमा नहीं थी। सामान्यतः अल्प आयु में विवाह कर दिया जाता थ। विवाह निश्चित करना व करवाना माता-पिता का अधिकार था उच्च घरानों में बहु पत्नी विवाह प्रचलित थे। आर्थिक समस्या के कारण अधिकांश लोग विवाह किया करते थे।

वस्त्राभूषणः- सल्तनत काल में हर वर्ग की पोशाके अलग-अलग थी। अधिकारी वर्ग के अमीर उच्च कोटि के वस्त्र पहनते थे। वह सिर पर पगड़ी या टोपी पहनते थे। हिन्दु अमीर भी इसी प्रकार की पोशाक धारण करते थे। राजपूत सामन्त कान में बाली पहनते थे। ब्राह्मण तिलक लगाते थे तथा रेशमी कपड़े की धोती बांधते थे। हाथ में छड़ी व जनाऊ पहनते थे। स्त्रिया चोली व लहंगा पहनती थी और चादर ओढ़ती थी। वस्त्र मौसम के अनुसार पहनते थे। आभूषणों के अन्तर्गत पुरूष व महिलाएं दोनों आभूषण धारण करते थे। सिर से पैर तक स्त्रियां आभूषण धारण करती थी और अपने आप को सुन्दर बनाने के लिए सौदर्न्य प्रसाधनों का इस्तमाल भी करती थी अबुल फजल ने 16 श्रृंगार का उल्लेख किया है।

सती-प्रथाः- सल्तनत काल में सतो प्रथा प्रचलित थी हिन्दु समाज में विशेषकर उच्च वर्ग में यह प्रथा थी पति की मृत्यु के उपरान्त पत्नी अपने पति के शव साथ अपने आप को जला डालती थी इसे प्रशंसनीय कार्य समझा जाता था। इस प्रथा में ब्राह्मणों का विशेष योगदान था। उनका कहना था कि पत्नी पति के साथ सती होती है उसे पति का अनन्त तक साहचर्य प्राप्त होता है। इस कारण हिन्दु महिलाओं में यह प्रथा काफी चल रही थी। इस प्रथा में सगमन सती प्रथा व अनुगमन सती प्रथा दोनो प्रकार की थी। सगमन सती प्रथा में पत्नी पति के शव के साथ सती होती थी। अनुगमन सती प्रथा में अगर कोई स्त्री गर्भवती होती थी बाद में अपने पति की किसी प्रिय वस्तु के साथ सती होती थी।

जौहर प्रथाः- सती प्रथा की तरह हिन्दु समाज में जौहर प्रथा का प्रचलन था। यह प्रथा विशेषकर राजपूतों में थी। जब भारतीयों की पराजय निश्चित हो जाती थी तब रानियां अपने सतीत्व तथा सम्मान को बचाने के लिए अपने आपको आग की लपटों में समर्पित कर देती थी ताकि मलेछड़ों के हाथों अपवित्र ना हो। सल्तनत काल में ऐसे अनेकों उदाहरण मिलते हैं जैसे हम्मीर देव जो रणथम्मौर के राजा थे जब वह अलाउद्दीन खिलजी से हार गये

तो उसकी रानियों ने जौहर किया – ऐसा उदाहरण चितौड़ की रानी पदमिनी का मिलता है जिसने 1600 नारियों के साथ जौहर किया।

अतिथि सत्कार व दानशीलता:- हिन्दु समाज में अतिथि का बड़ा सत्कार होता था और वह दानशीलता को बड़ा महत्व देते थे हिन्दु यात्रियों के लिए धर्मशालाएं, अनाथो के लिए अनाथ आश्रम, शिक्षा के लिए विद्यालय बनवाने थे जो नि:शुल्क व्यवस्था थी। विदेशी लेखकों ने भी हिंदुओं के अतिथि सत्कार व दानशीलता की काफी प्रशंसा की है।

ग्राम व नगर- सल्तनत काल में ग्राम व नगर बहुत महत्वशाली थे दोनों में जनसंख्या का अधिकांश भाग ग्रामों में रहता था। लेकिन गांव पूर्ण विकसित नहीं थे लोगों के घर कच्चे व सादे थे। जिनमें सुविधाओं की बहुत कम वस्तुऐं होती थी उनका व्यवसाय कृषि, पशुपालन, उद्योग–धन्धे थे। गरीब किसान मिट्टी व पीतल दोनों प्रकार के बर्तनों को काम में लाते थे। अछूतों के मकान गांवों की सीमा पर होते थे।

नगर- नगर नियोजित ढंग से बने होते थे। नगर के चारों और सुरक्षित दीवार होती थी प्रवेश द्वार होते थे सड़के पक्की होती थी। जल व्यवस्था व रोशनी का प्रबन्ध था। लोगों के मकान पक्के व सुविधाओं से युक्त थे बाजारों में दुकाने व व्यापारिक प्रतिष्ठान होते थे। बाजारों में काफी रौनक रहती थी। गांव की तरह नगर में भी अलग–अलग वर्ग के अलग–अलग हिस्से थे। बडे नगरों व राजधानियों में शानदार विशाल भवनों का अलग आकर्षण होता था।

अन्त में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि सल्तनत काल में भारतीय समाज की स्थिति में काफी परिवर्तन आ चुका था। एवम् कई बुराइयों ने समाज में जन्म ले लिया था। जो ना केवल सल्तनत काल बल्कि सम्पूर्ण मध्यकाल में भारत में चलती रही। इस काल में स्त्रियों को अनेक बुराईयों का सामना करना पडा समाज बुरी तरह से खण्डित हो चुका था। समाज में अनेक वर्ग बन चुके थे जो हमेशा एक दूसरे के विरोध में लगे रहते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. B.N. Lunia – Life and Culture in Medieval India.
2. Dr. K.M. Ashraf – Life and Conditions of the people of Hindustan.
3. Dr. A.B. Panday – Early Medieval India.
4. Dr. A.L. Srivastava – The Sultanate of Delhi.